बदलती राहें

Gunjan

वर्ष 01, अंक 10

धर्मशाला, सोमवार, 04 मई 2015

युवाओं की पांच प्रमुख समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत

यूथ हैल्थ सर्वे 2014 ने गिनाए हैं युवाओं के अहम मुद्दे

यूथ हैल्थ सर्वे 2014 के अनुसार प्रदेश के करीब पांच फीसदी युवा किसी न किसी प्रकार की बीमारी या स्वास्थ्य संबंधि समस्या से ग्रस्त पाए गए हैं। हालांकि विशेषज्ञों ने इस आकंड़े को मामूली अनुमान पर आधारित बताया है, मगर यह भी कहा है कि यह आंकड़ा इससे कहीं अधिक भी हो सकता है। यूथ हैल्थ सर्वे में युवाओं से संबंधित दस समस्याओं को अंकित किया गया है। इन समस्याओं को 10 रैंक दिए गए हैं। इनमें पहले नंबर पर अंडरवेट, दूसरे पर मोबाइल फोन की लत, तीसरे नंबर पर पूरी तरह चिंताग्रस्त अनुभव करना, पिछले एक साल की सिर की चोटें चौथे नंबर पर, हिंसा का शिकार होने के मामले पांचवे नंबर पर, धूम्रपान का शौक छठे नंबर पर, शराब का सेवन सातवें नंबर पर, दबाव या डिप्रेशन में रहने की परेशानी आठवें नंबर पर, मोटापा या ज्यादा वजन की बीमारी नौवें नंबर पर और खुद को नुकसान पहुंचाने की प्रवृत्ति दसवें नंबर के रैंक पर रखी गई है। इन बीमारियों या समस्याओं में से विशेषज्ञों ने पांच को प्रमुख समस्याओं में शामिल करते हुए प्रदेश सरकार से इन पर ध्यान केंद्रीत करने की सिफारिश की है। साथ ही प्रदेश में चलाए जा रहे समस्त स्वास्थ्य या स्वास्य से जुड़े कार्यक्रमों में इन पर प्रमुखता से ध्यान केंद्रीत करने पर बल दिया है। इन समस्याओं को इस प्रकार से प्रभाषित किया गया है:-

यौन, प्रजजन व स्वच्छता

सर्वे के अनुसर करीब 12 फीसदी युवाओं ने सेक्स किए जाने की बात स्वीकारी है। वहीं इनमें से 60 फीसदी ने माना कि उन्होंने पहली बार या अंतिम बार सेक्स करते समय कंडोम का इस्तेमाल किया था। सर्वे में बालिग होने से पूर्व ही सेक्स करने वाले युवाओं की संख्या 40 फीसदी दर्ज की गई है। वहीं यह बात भी सामने आई है कि करीब 90 फीसदी युवा 21 वर्ष की आयु पूरी होने से पहले ही सेक्स संबंधित गतिविधियों में शामिल हो जाते हैं। इनमें से 42.92 फीसदी लड़के 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने से पूर्व ही सेक्स संबंधि गतिविधियों में शामिल पाए गए हैं। वहीं ऐसा करने वाले लड़कियों की संख्या भी 31.2 फीसदी रही है। विशेषज्ञों का कहना है कि यौवन, प्रजनन व यौन संबंधों को लेकर जगरूक करने के लिए स्कूल टीचर एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। वहीं सर्वे में यह बात भी पता चली है कि करीब एक-तिहाई लड़के एक से अधिक पार्टनर रखते हैं, जबकि लड़कियों का एक ही पार्टनर होता है। हिमाचली युवा आपसी संबंधों को बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं। साथ ही वे ज्वाइंट फैमली सिस्टम को तरजीह देने के साथ लीव इन रिलेशनशिप के सख्त खिलाफ पाए गए हैं। लड़कियों की स्वच्छता के मामले में पता चला है कि मासिक धर्म के समय अधिकतर लड़कियां सेनेटरी पैड का इस्तेमाल करती है। इस दौरान साफ सफाई को वे अधिक महत्व देती हैं। वहीं यह बात भी पता चली है कि 22 फीसदी लड़कियां इस दौरान जरूरी स्वास्थ्य सावधानियां नहीं बरतती हैं। इसके अलावा इस दौरान लड़कियों को अलग रखा जाता है। उन्हें घर के कामकाज करने और मंदिर जाने के कार्यों से दूर रखा जाता है।

स्वास्थ्य लाभ

प्रदेश के 84.39 फीसदी युवा किसी बीमारी के समय सरकारी अस्पताल की सेवायें लेते हैं। वहीं ऐसी स्थिति में निजी अस्पतलों की सेवायें लेने वाले युवाओं की तादात महज 12.82 फीसदी ही पाई गई है। रिपोर्ट के अनुसार सरकारी अस्पताल में इलाज को प्राथमिकता देने वाले युवाओं में लड़कियों की तादात लड़कों से थोड़ी ज्यादा है। इसके अनुसार 83.67 फीसदी लड़कों की तुलना में 85.15 फीसदी लड़कियों ने माना कि वे किसी प्रकार की बीमारी के समय सरकारी अस्पताल में इलाज करवाती हैं। प्रदेश के युवाओं को युवाओं की बीमारियों के समाधान के लिए खोले गए विभिन्न क्लीनिकों के बारे में जानकारी नहीं के बराबर है। प्रदेश के महज 1.17 फीसदी युवा ही एडोलसेंट रिप्रोडक्टिव व सेक्सुअल हेल्थ क्लीनिकों (वाईएसपीके/एआरएसएच) के बारे में जानते हैं। इतना ही नहीं इन क्लीनिकों में जाने वालों की तादात भी शून्य के करीब (0.66 फीसदी) ही है। हालांकि किशोरी क्लीनिक के बारे में वे कुछ हद तक (32.88 फीसदी) जानकारी रखते हैं। वहीं इन क्लीनिकों में जाने वालों की तादात 17.17 फीसदी रही। हालांकि किशोरी क्लीनिकों की जानकारी रखने में लड़कों की तुलना में लड़कियों की संख्या अधिक (25.07 / 41.15 फीसदी) है, मगर यहां जाने के मामले में लड़के अव्वल पाए गए हैं। यहां जाने वाले लड़कों की संख्या 18.21 फीसदी और लड़कियों की 16.06 फीसदी दर्ज की गई है।

पदार्थों का सेवन करना

प्रदेश में धूम्रपान करने वाले युवाओं में से 61.03 फीसदी ऐसे पाए गए हैं, जिन्होंने 15 से 18 वर्ष की आयु के बीच धूम्रपान किया था। वहीं 15 साल की आयु से पूर्व ही धूम्रपान करने वालों की संख्या 16.43 फीसदी सामने आई है।

धूम्रपान करने वालों में 41.5 फीसदी लड़के शामिल हैं। वहीं धूम्रपान के आदि बन चुके लड़कों की संख्या 5.58 फीसदी सामने आई है। इसी तरह प्रदेश में शराब का सेवन करने वाले युवाओं की संख्या 7.91 फीसदी है। सर्वे में शामिल युवाओं ने माना कि नशीले पदार्थों का सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है, मगर वे इसे स्वास्थ्य संबंधि समस्याओं से जोड़कर नहीं देखते।

पोषाहार

पोषाहार के मामले में प्रदेश की स्थिति काफी चिंताजनक बताई गई है। प्रदेश के युवाओं में कम वजन एक बड़ी समस्या उभर कर समने आई है। प्रदेश के करीब आधे के करीब युवा अंडरवेट पाए गए हैं। वहीं ओवरवेट या मोटापे के मामले प्रदेश में बहुत कम है। इनका आंकड़ा महज पांच फीसदी दर्ज किया गया है।

हिंसा व चोटें

हिमाचल प्रदेश के 8.19 फीसदी युवा हिंसा का शिकार होते हैं। लड़कियों की तुलना में लड़के अधिक संख्या में किसी बात को लेकर अपने साथियों या अन्य लोगों के गुस्से की चपेट में आकर हिंसा का शिकार बनते हैं।

सर्वे में शामिल कुल युवाओं में से 10.48 फीसदी लड़के हिंसा का शिकार पाए गए। वहीं लड़कियों में हिंसा का यह स्तर आधे के करीब पाया गया, मगर कुल युवाओं में से 5.76 फीसदी लड़कियों ने भी हिंसा का शिकार होने का खुलासा किया है। लड़कियां अधिकतर शारीरिक हिंसा, गालीगलौज व छेड़छाड़ का शिकार होती हैं। लड़कों में चोट लगने का स्तर भी काफी ज्यादा (14.72फीसदी) है।

दिमागी स्वास्थ्य परेशानियां

हिमाचल के 6.94 फीसदी युवक व युवतियां डिप्रेशन यानी अवसाद के शिकार पाए गए हैं। इसके अलावा 15.54 फीसदी युवाओं ने खुद को पूरी तरह चिंताग्रस्त बताया है।

चिंताग्रस्त युवाओं के मामलों में लड़कों की तुलना में लड़कियों की संख्या ज्यादा सामने आई है। इसके तहत 19.19 फीसदी लड़कियों ने खुद को अत्याधिक चिंताग्रस्त बताया, जबकि इनकी तुलना में लड़कों की संख्या 12.1 फीसदी रही।

मीडिया के प्रभाव

हिमाचल के युवाओं के लिए मीडिया एक अहम भूमिका अदा करता है। यहां के युवा टीवी देखने व मोबाइल का इस्तेमाल करने में काफी आगे हैं।

सर्वे के अनुसार विभिन्न मुद्दों की जानकारी रखने के अलावा व्यवहार व समाज को दिशा देने के मामले में हिमाचल प्रदेश का मीडिया काफी अहम है। अधिकतर युवाओं के जुड़े होने के चलते प्रदेश सरकार इसका सकारात्मक इस्तेमाल कर सकती है। प्रदेश के युवा अधिकतर समय टीवी देखने में व्यतित करते हैं।

जहां लड़के फिल्में देखना ज्यादा पसंद करते हैं, वहीं लड़कियों सीरियल व सुंदरता से जुड़े विज्ञापन देखना पसंद करती हैं। प्रदेश के अधिकतर युवा मोबाइल के आदि हो चुके हैं।

उजली किरण

एड्स ने बदल दी नासमझ व भोली अनु की जिंदगी

- ड्राइवर पति ने छोटी सी उम्र में ही लगा दिया जानलेवा रोग
- पति की मौत के बाद अपनों व समाज से मिला तिरस्कार
- गुंजन के साथ जुड़ने के बाद दिखाई दी उजाले की किरण

बैजनाथ के एक गांव की रहने वाली अनु देवी काल्पनिक नाम की शादी महज 17 साल की आयु में एक ट्रक ड्राइवर के साथ वर्ष 1996 में हुई थी। तीन भाई व एक बहन के परिवार की इस लड़की को जवानी की दहलीज पर कदम रखने से पहले ही गृहस्थी के फेर में उलझा दिया गया था। हालांकि वह शादी के बाद अपने परिवार में घुल मिलकर रहने लगी और पति के प्रेम के चलते उसे इस बात का अहसास ही नहीं हुआ कि उसकी शादी कच्ची उम्र में कर दी गई थी। उसकी दो लड़कियां भी थीं। इस तरह परिवार हंसी खुशी चल रहा था, मगर अचानक एक दिन अनु के जीवन में ऐसी घटना घटी जिसने उसके खुशहाल गृहस्थ जीवन को हिला कर रख दिया। अनु ने बताया कि उसके पति वर्ष 2003 में अचानक काफी बीमार हो गए।

उन पर कोई दवा असर नहीं कर रही थी। इस पर उन्हें पालमपुर स्थित सरकारी अस्पताल में लाया गया। जहां उनका इलाज शुरू गया, मगर वहां भी उनकी बीमारी डाक्टरों के कंट्रोल में नहीं आ रही थी। इस पर उन्होंने

उनके पति को एचआईवी टेस्ट के लिए शिमला भेजा। जब यह रिपोर्ट आई तो पता चला कि उन्हें एड्स है। ऐसे में उनका नए सिरे से इलाज शुरू हो पाता रिपोर्ट आने के दो दिन बाद ही अनु के पति ने दम तोड़ दिया। अनु ने बताया कि इस बारे में उसे कुछ मालुम नहीं था कि उसके पति की मौत किसी बीमारी के कारण हुई है। अब पति की मौत के बाद दो बेटियों की जिम्मेवारी उसके सिर आ पड़ी थी।

उसकी छोटी बेटी तो महज छह माह की थी। अनु ने बताया कि उसके पति ने मौत से पहले उससे हाथ जोड़ कर माफी मांगते हुए बस इतना कहा कि उससे गलती हो गई है और वह उसे छोड़ कर जा रहे हैं। एड्स की बात से अनजान अनु ने अपने पति से कहा कि ऐसी बात क्यों कर रहे हो आप ठीक हो जाओगे, मगर ऐसा हुआ नहीं। पति की मौत के बाद वह एक साल तक अपने परिवार में ही रही। इस बीच अनु के पिता ने शक होने पर शिमला में उसका भी एचआईवी टैस्ट करवाया तो वह भी एचआईवी पाजिटिव निकलीं। अनु इस एचआईवी नाम की बीमारी से बिल्कुल अंजान थी। उसे जब पालमपुर में काउंसलर के पास भेजा गया तो उसने उसे इस बीमारी के बारे में बताया। यह सुनकर उसके पांव के नीचे से जमीन खिसक गई। उसे लगा कि अब वह भी जल्द ही मर जाएंगी।

अनु ने बताया कि वह यह बात तो जानती थी कि उसके पति का बाहर किसी से संबंध है, मगर वह यह नहीं जानती थी कि इससे उसके पति को ऐसी बीमारी लग जाएगी जो उसकी जान ले लेगी। साथ में उसे अपनी चपेट में लेकर जिंदगी बर्बाद कर दी। हालांकि अनु को इस बात से जीने की प्रेरणा मिली कि उसकी दोनों बेटियां एचआईवी से ग्रसित नहीं है। उनके पालन पोषण की चिंता ने अनु को समाज की उपेक्षा की परवाह किए बिना आगे बढ़ने व इस बीमारी के समाजिक परिणामों का डट कर मुकाबला करने की हिम्मत दी। अनु बताती है कि उसकी बीमारी का पता चलने पर उसके जेठ-जेठानियां व अन्य पारिवारिक सदस्य दूरी बनाने लगे। हालांकि उसके सास-ससुर मुसीबत की इस घड़ी में उसके साथ ही रहते हैं। बीच में उनके मायके वालों ने ससुराल वालों के साथ बैठ कर यह बात भी की कि उनके बेटे ने उसका भी जीवन बर्बाद कर दिया और उसे साथ ले जाने की कोशिश करने लगे, मगर वह अपने सास-ससुर के साथ ही रही। हालांकि उसकी छोटी बेटी को उसकी मां साथ ले गई, मगर बड़ी बेटी उसी के साथ रहती है।

अनु ने बताया कि उसने अपना व बेटी का भरन-पोषण करने के लिए गांव में ही मनरेगा के तहत मजदूरी करना शुरू कर दिया। साथ ही उसे स्कूल में खाना बनाने की नौकरी भी मिल गई। हालांकि कुछ समय बाद ही लोगों ने यह बात कहते हुए कि उनके बच्चों को भी बीमारी लग जाएगी, उसे खाना बनाने के काम से हटवा दिया। घर पर उसे उसकी जेठानी तंग करने लगी। वह उससे दूरी बनाने के साथ ही यह बात कहती कि उन्हें भी यह बीमारी लग जाएगी। फिर उसे जैसे-तैसे चाय के बगीचे में काम मिल गया। वहां उसे जो मजदूरी मिलती, उससे परिवार का गुजारा चलता रहा। इस बीच एक दिन जब वह पालमपुर में दवाई लेन गई थी, तो वहां अस्पताल में गुंजन संस्था की काउंसलर श्रेष्ठा मिली। श्रेष्ठा ने उसे बताया कि वह संस्था के साथ काम करके अपना व अपने बच्चों का भरण पोषण करने के साथ ही अपने जैसे बाकी लोगों का भी सहारा बन सकती है। संस्था के तत्कालीन आउटरिच वर्कर स्व. किशन चंद ने उसे इंटरव्यू के लिए टांडा बुलाया।

उसे संस्था तक पहुंचाने में उसके पिता ने पूरा साथ दिया। अनु ने बताया कि काम मिलने से पहले वह यही सोचती रही कि जब अपने ही उससे किनारा कर रहे हैं, तो भला कौन उसे काम देगा। इंटरव्यू के बाद जब उसे गुंजन में काम पर रखा गया तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसे जीवन में उजाले की एक किरण दिखाई दी। यहां आकर उसने जाना कि एचआईवी पाजिटिव होने के क्या कारण होते हैं और किन कारणों से यह फैलता है।

पहले तो मुझे अपने पति के माफी मांगने की बात समझ में आई और फिर इस बात का भी अफसोस हुआ कि उसके भोलेपन के कारण वह अपने पति को गलत काम करने से नहीं रोक पाई थी।

इसके बाद उसने अपने जेठानी सहित गांव वालों को भी यह बात समझाई कि एड्स कैसे फैलता है। तब से लेकर अब उसकी जेठानी भी उससे दूर नहीं भागती, बल्कि उसके काम से लौटने का इंतजार करती है। अब संस्था से जुड़कर वह यह बात भूल चुकी है कि उसके खून में ऐसा वायरस है, जो एक इंसान की गलती के कारण दूसरे के जीवन को तबाह कर देता है।

भूकंप के विनाश से बचाव को बदलनी होगी मानसिकता

● सख्त नियम और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत ● विकास की अंधी दौड़ कर रही विनाश को प्रेरित

साभर : पीपी रैणा

भूकंप का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना हमारी पृथ्वी का इतिहास है। असंख्य प्रयोगों तथा परिस्थितियों के गंभीर अध्ययन के आधार पर वैज्ञानिकों की यह राय बनी कि यह पृथ्वी आरंभ में एक आग का गोला थी जो अपनी धुरी के इर्दगिर्द घूमने के साथ साथ सूर्य के इर्दगिर्द भी एक निश्चित पथ पर घूम रही थी। इसे ठंडा होने में युगों लगे और वर्तमान आकार लेने के लिए असंख्य विस्फोट भी हुए। महाद्वीप बने, पहाड़ बने, गहरी घाटियां बनीं, समुंद्र बने, वनस्पतियों का जन्म हुआ और तब जाकर जीव सृष्टि का आरंभ हुआ। ऐसा हमारे पुराणों में तथा अनेक धार्मिक ग्रंथों में विभिन्न प्रकार से वर्णित किया गया है। लोगों की जिज्ञासा को शांत करने के लिए कई प्रकार की किंवदन्तियों तथा गाथाओं के द्वारा ज्ञानीजनों ने भूकंप को प्रकृति का महाप्रकोप कह कर लंबे समय तक पर्दा डाले रखा। इसके अतिरिक्त उस समय और कोई विकल्प था भी नहीं। आज भी वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों के बावजूद भूकंप यथावत एक रहस्यमयी महाप्रकोप ही बना हुआ है। हम अभी भी नहीं जानते कि भूकंप कब, कितनी तीव्रता से और कहां आएगा। काफी हद तक इसके कारणों का पता चल चुका है, लेकिन अभी भी निश्चित तौर पर इसके संबंध में भविष्यवाणी कर पाना संभव नहीं हो सका है। यदि विश्व के मानचित्र पर जहां आज तक के सभी छोटे बड़े भूकंपों को दर्शाया गया है, दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है कि भूकंप अधिकतर दो महाद्वीपों के जोड़ के क्षेत्रों में ही आते हैं। इनका कारण प्लटों के सरकने के कारण भूगर्भ में होने वाले विस्फोट होते हैं।

वर्तमान युग की विकासवादी विचारधारा अनेक विसंगतियों की जन्मदात्री है। भारतीय मानसिकता ने जहां हमारे जनमानस को भावुकता के साथ जोड़ रखा है, वहीं हमारी आकांक्षाओं और कार्यप्रणाली मे पाश्चात्य अर्थवादी विचारधारा के समावेश से स्थिति और भी विकट होने लगी है। वास्तविकता यह है कि हमारे विकास की दिशा भ्रमित होकर किन्हीं अंधेरे कोनों की ओर बढ़ती जा रही है। हमारे पास एक ही धरती है जिस पर सभी शत्रु और मित्रों को एक साथ ही रहना है। वर्तमान युग की भौतिक तथा आर्थिक विकास की अंधी दौड़ जिस तरह से इसे तबाह करने में लगी हुई है वह जल्दी ही हमें उस स्थिति में ला खड़ा कर देगी जहां से वापस लौट पाना लगभग असंभव सा होगा। छोटी बुराई को बड़ी बुराई से मिटाया नहीं जा सकता। विकास केवल भौतिक स्तर पर ही हो तो उसे सर्वांगीण विकास नहीं कहा जा सकता। यह केवल एकांकी विकास होता है। जब तक विकास मानसिक, बौद्धिक और अध्यात्मिक स्तर को न छुए उसे सर्वांगीण विकास नहीं कहा जा सकता। हमारी मानसिकता में घुलते जा रहे स्वार्थ और असहण्णिुता के विष का भी कुछ किया जाना चाहिए। इसके चलते सबका साथ और सबका विकास मात्र कुछ अच्छे लगने वाले शब्द मात्र हैं जो नारे ही बन कर रह जाएंगे और हमारी बदहवास भागदौड़ एक भयंकर त्रासदी में बदल जाएगी। पोस्टर लगा देने से और औपचारिक माक ड्रिल कर लेने से क्या होगा जब तक सारा समाज और सारी व्यवस्था इसके प्रति गंभीर न हों। यह एक अभियान नहीं रहा है एक व्यवसाय बनता जा रहा है। किसी को यह आभास नहीं कि वास्तविक परिस्थितियां कितनी भयावह होंगी। दोनों चीजें एक ही साथ हो रही हैं, बचाव की पद्धति का प्रचार भी और विनाश का प्रयोग भी। पहाड़ों का एक विशेष भौगोलिक तंत्र होता है, जिसको समझना बहुत जरूरी होता है। यहां प्रत्येक भूखंड का विस्तृत सर्वेक्षण आवश्यक होता है। यहां की ऊंची-नीची घाटियां, टेढ़े-मेढ़े नदी नाले, खेत-खलिहान और मिट्टी के अंदर दबी चट्टानें सबकी अपनी अपनी अलग कहानी होती है। भूकंप की तरंगें इन सब पर अपना प्रभाव अलग तरह से डालती हैं और इनमें आने वाले परिवर्तन भी अलग अलग ही होते हैं। एक छोटा घर हो या बड़ा महल, सड़क हो या खेल का मैदान सबके निर्माण का एक अपना सिद्धान्त होता है। इनके आकार और प्रकार के अनुसार ही उनकी नींव का निर्धारण भी होना होता है। प्रत्येक स्थल का गंभीरता से अध्ययन करने के पश्चात ही निमार्ण व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया जा सकता है। गलत जगह पर अच्छी तरह से किया गया निमार्ण भी घातक हो सकता है और सही जगह पर किया गया कमजोर निमार्ण भी बचा रह सकता है। सही जगह का चुनाव और सही तकनीक का अपनाया जाना एकमात्र उपाय है बचाव का। कोई भी व्यक्ति यह कल्पना भी नहीं करता कि उसका घर भूकंप की चपेट में आकर ध्वस्त हो जाए और करनी भी नहीं चाहिए क्योंकि आज के वैज्ञानिक युग में जब हमारे पास आधुनिकतम निर्माण तकनीकों का भंडार भरा पड़ा है तो फिर असुरक्षित भवन बने ही क्यों? जागरूकता अभियान तभी कामयाव हो सकते हैं जब जनमानस की रुचि इस विषय में रहे और इसकी गंभीरता का आभास दोनों ओर बराबर हो। जब शासन और प्रशासन गंभीर नहीं होते, तो नियमों में ढील देने का एक रिवाज सा होने लग जाता है। जैसे कई वर्षों से हिमाचल प्रदेश में होता आ रहा है। कभी लिबरल रिटेंशन पालिसी तो कभी नगर एवं ग्राम योजन अधिनियम को ही हटा देने का प्रचार। ऐसे प्रयोग घातक सिद्ध हुए हैं। इससे सारा ढांचा ही चरमरा गया है। एक तरफ कहा जाता है कि पंचायतें अपने क्षेत्र की योजनाएं तैयार करें और दूसरी और उन क्षेत्रों में अबाध निर्माण की छूट भी दे दी जाती है। ऐसी परिस्थितियों में केवल स्वार्थी तत्त्वों को ही लाभ पहुंचता है। नियमों और सिद्धांतों में आस्था रखने वाले लोग हमेशा ठगा सा महसूस करते हैं तथा अपनी सिद्धांतपरता को कोसने के सिवा कुछ नहीं कर पाते।

पिछले कुछ समय से उच्च न्यायालय द्वारा टिप्पणी करने पर कुछ सुधार के आसार नज़र आने लगे थे, लेकिन यह सिलसिला कुछ ही देर तक चल पाया क्योंकि कई शरारती तत्त्वों द्वारा यह प्रचार किया गया कि सरकार की ओर से ऐसे संकेत मिले हैं कि सभी अवैध निमार्ण नियमित कर दिए जाऐंगे। इसका किसी सरकारी विभाग या अधिकारी ने कोई खंडन तक नहीं किया। आज स्थिति यह है कि प्रत्येक स्तर पर अस्पष्टता के चलते अनियंत्रित निर्माण खुलेआम होने लगे हैं। जिन घरों की नींव दो मंजिल निर्माण के लिए तैयार की गई थी, उन्हें भी चार-चार मंजिलों तक बढ़ाने का सिलसिला चल निकला है। जहां कभी दो या तीन मीटर सैटबैक रखे गए थे उन्हें भी लोगों ने दीबारें आगे बढ़ा कर मकान के भीतर ले लिया। ऐसे में कैसे सुरक्षित रह पाऐंगे ऐसे घर? कौन लेगा इनकी सुरक्षा की गारंटी? यह जरूर है कि आपदा आने पर जानमाल के नुकसान पर सरकार मुआवजा देती है और कई स्वयंसेवी संस्थाएं चंदा इकट्ठा करके आपदा प्रबंधन में अपना भरपूर योगदान भी देती हैं। यह समस्या का हल नहीं है। महंगे और उच्च स्तर के जागरूकता अभियानों तथा माक ड्रिल से कुछ नहीं होगा, जब तक एक उत्तरदायी व्यवस्था का निर्माण न हो। हमारे शहरों और गावों का न तो इस आशय से कोई सर्वेक्षण होता है और न ही कोई ऐसा जागरूकता अभियान चलाया जाता है, जिसके माध्यम से आम नागरिकों को इस संबंध में जानकारी दी जा सके। उन्हें इस विषय की गंभीरता से परिचित करबाया जा सके।

नए भवनों के निर्माण एवं पुराने मकानों के सुदृढ़ीकरण की अनेक तकनीकें राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने विकसित कर रखी हैं। इनका प्रचार और प्रसार कैसे हो इसकी कोई निश्चित व्यवस्था नहीं हो पा रही है। इसलिए यह निश्चित है कि प्रकृतिक नियमों और सिद्धांतों की उपेक्षा तथा अवहेलना यों ही होती रहेगी। घर भी ऐसे ही बनते रहेंगे और विनाश का क्रम भी ऐसे ही चलता रहेगा। भूकंप हो, बाढ़ हो, आग हो या तूफान सब होगा, लोग मरते रहेंगे, खैरात बंटती रहेगी, लेकिन हम न सीखेंगे न सुधरेंगे। शहर फिर बसेंगे और फिर मिटेंगे यही है शायद आज के युग में विकास की परिभाषा।

(लेखक नगर एवं ग्राम योजना विभाग से नगर योजनाकार रह चुके हैं।)

प्रशिक्षु नर्सों को टीबी के खतरे से अवगत कराया

● तंबाकू से टीबी मरीज को मौत का खतरा तीगुणा: डा. सूद
● गुंजन संस्था के सहयोग से हुआ ओरिएंटेशन कार्यक्रम

पालमपुर। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से गुंजन संस्था द्वारा चलाए जा रहे सिद्धबाड़ी स्थित रीजनल रिसोर्स एंड ट्रेनिंग सेंटर नार्थ-।। की ओर से नेताजी सुभाष कालेज आफ नर्सिंग पालमपुर में ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि उपस्थित हुए जिला टीबी नियंत्रण अधिकारी डा. राजेश सूद ने प्रतिभागियों को टीबी की बीमारी से जुड़ी अहम जानकारियां दीं। उन्होंने बताया कि तंबाकू सेवन करने वालों में टीबी का खतरा कई गुणा ज्यादा होता है। वहीं ऐसे मरीजों में मृत्यु का खतरा भी तीन गुणा ज्यादा रहता है। टीबी से मौत के मामले निरंतर बढ़ते जा रहे हैं। इस बीमारी से विश्व में रोजाना एक हजार लोगों की मौत हो रही है। उन्होंने कहा कि तंबाकू के धूंए से बच्चों में भी सांस की बीमारी का खतरा अत्याधिक होता है। उन्होंने कहा कि धूम्रपान या तंबाकू सेवन छोड़ना आसान है। इसके लिए डाक्टर की राय ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि कुपोषण से भी टीबी होने का खतरा अधिक होता है। उन्होंने कहा कि टीबी का इलाज संभव है और सरकारी अस्पतालों में निशुल्क इलाज किया जाता है। इसके इलाज को बीच में छोड़ने से यह बीमारी लाइलाज हो जाती है। अगर किसी को दो सप्ताह से लगातार खांसी है, बुखार आ रहा है या वजन कम हो रहा है, तो यह टीबी के लक्षण हो सकते हैं। इसकी तुरंत जांच करवानी चाहिए। इस अवसर पर स्कूल की प्रिंसिपल अनीता गोस्वामी सहित प्रशिक्षु नर्सें पूनम शर्मा, सोनिका, दीक्षा मेहता, रोजी चौधरी, हेमलता, शिवांगी, गायत्री देवी, सुषमा शर्मा, सुरभी राणा, दीक्षा चौहान, निशा, शैली, शालू, मनीषा, मधू, वंदना, सागरिका, मनीषा देवी, पूनम शर्मा, सपना, पूजा, मोनिका, ईशा ठाकुर, तमन्ना ठाकुर, वर्षा, विश्वभारती, चंपा देवी, शिल्पा, गितिका राणा, दीनेश कुमारी, सोनम, अल्का शर्मा, मिनाक्षी डोगरा, स्मृति सूद, अर्चना, संतोष, ज्योति बंसल, भुवनेश्वरी, निशा उपस्थित थीं।

आई.ई.सी. मेटिरियल डवेलप्मेंट - पोस्टर श्रृंखला